भक्तियोग को गौरवान्वित किया गया—**योगिनामपि सर्वेषाम्**—"सब प्रकार के योगियों में जो हृदय में निरन्तर मेरा चिन्तन करता है, वह सर्वोत्तम है।" सातवें से बारहवें अध्याय तक शुद्ध भक्तियोग के स्वरूप और क्रियाओं का विवरण है। अन्तिम छः अध्यायों में ज्ञान, वैराग्य, अपरा प्रकृति और परा प्रकृति के कार्यों तथा भक्तियोग का विवेचन है। यह निष्कर्ष हुआ कि सम्पूर्ण कर्म श्रीभगवान् से युक्त होकर ही करने चाहियें। अतः सब कर्मों में भगवान् विष्णु के नाम **ओम् तत् सत्** का उच्चारण करे। गीता के तीसरे षटक (अध्याय १३-१८) में पूर्ववर्ती आचार्यों और ब्रह्मसूत्र (वेदान्तसूत्र) के प्रमाण पर भक्तियोग को सिद्ध किया गया। वेदान्तसूत्र से स्पष्ट है कि एकमात्र भक्तियोग जीवन का परमलक्ष्य है। कुछ निर्विशेषवादी वेदान्तसूत्र के ज्ञान पर अपना एकाधिकार समझते हैं; परन्तु वास्तव में तो वेदान्तसूत्र का एकमात्र लक्ष्य भक्तियोग को जानना ही है, क्योंकि श्रीभगवान् स्वयं वेदान्तसूत्र के रचयिता हैं और एकमात्र वे ही इसके तात्पर्य को पूर्ण रूप से जानते हैं। पन्द्रहवें अध्याय में यह कहा जा चुका है। सम्पूर्ण वैदिक शास्त्रों का लक्ष्य भक्तियोग है, यह भगवद्गीता से सिद्ध हो जाता है।

पूर्व में, द्वितीय अध्याय में गीता की सम्पूर्ण विषयवस्तु समाहत है; इसी प्रकार अट्ठारहवें अध्याय में भी सम्पूर्ण उपदेश का सार निभृत है। जीवन का उद्देश्य त्याग के अभ्यास से प्रकृति के तीनों गुणों से परे शुद्धसत्त्वमयी दिव्य अवस्था को प्राप्त हो जाना बताया गया है। अर्जुन गीता की विषयवस्तु के दो भिन्न-भिन्न तत्त्वों—त्याग और संन्यास को स्पष्ट रूप से जानना चाहता है; इसलिए अब श्रीभगवान् से इस सम्बन्ध में जिज्ञासा करता है।

इस श्लोक में श्रीभगवान् के सम्बोधन रूप—**हृषीकेश** और **केशिनिषूदन**—ये दोनों शब्द महत्त्वपूर्ण हैं। श्रीकृष्ण हृषीकेश हैं, अर्थात् सम्पूर्ण इन्द्रियों के स्वामी हैं; इसलिए वे चित्त में निरन्तर शान्ति रखने में हमें सहायता दे सकते हैं। अर्जुन का निवेदन है कि वे सम्पूर्ण तत्त्व को इस प्रकार सार रूप में कहें कि चित्त सदा समभाव में स्थिर रहे। परन्तु इससे उसका सन्तोष नहीं हुआ; फिर भी, उसे कुछ सन्देहरूप असुर पीड़ित कर रहे हैं। अतएव उसने श्रीकृष्ण को 'केशिनिषूदन' कहकर पुकारा। श्रीकृष्ण ने पूर्वकाल में केशी नामक भयंकर असुर का नाश किया था। अर्जुन को विश्वास है कि कृष्ण उसके सन्देहरूपी असुर का वध भी अवश्य करेंगे।

श्रीभगवानुवाच।
काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः।।२।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **काम्यानाम्**=सकाम; **कर्मणाम्**=कर्मों के; **न्यासम्**=त्याग को; **संन्यासम्**=संन्यास; **कवयः**=ज्ञानीजन; **विदुः**=जानते हैं; **सर्वकर्मफलत्यागम्**=सब कर्मफलों के त्याग को; **प्राहुः**=कहते हैं; **त्यागम्**=त्याग; **विचक्षणाः**=अनुभवी पुरुष।